ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 106-112
ISSN NO.- 2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.- 2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

पर्यावरण बोध, जागरूकता तथा पर्यावरणीय दुष्प्रभाव के प्रति निदर्शितों के दृष्टिकोण

रूपल यादव
असिसटेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, शारदा विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोयडा (उ0प्र0) भारत

Received-20.01.2023, Revised-25.01.2023, Accepted-30.01.2023 E-mail: peetambrask@gmail.com

सारांश: *जिस क्रिया से वायु, जल, मिट्टी एवं वहाँ के संसाधनों के भौतिक, रासायनिक अथवा जैविक गुणों में किसी अवांछनीय परिवर्तन से जैसे जगत एवं सकल कारक, घटक, तत्व या कारण जिनसे प्रदूषण पैदा होता है, प्रदूषण (Pollutants) कहलाते हैं। यह सत्य है कि "स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से भारत में चतुर्दिक विकास हुआ है। कृषि, उद्योग, विकसित तकनीकों, इलैक्ट्रानिक, आणविक शक्ति, यातायात एवं वाहन सभी क्षेत्रों में आबादी के अनुपात में तेजी से विकास हुआ है। किन्तु विकास एवं अदुरदर्शितापूर्ण कार्यों के परिणाम स्वरूप वायु, जल, मिट्टी जहरीली/विषैली बनती जा रही है। आज उत्तरी भारत की अधिकांशतः प्राणदायिनी नदियाँ इतनी प्रदूषित होती जा रही हैं कि उनका जल अब पीने योग्य नहीं रह गया है, यहाँ तक कि उसमें पोषित जीवन भी समाप्त हो रहा है। इसका एक मात्र कारण कल कारखानों, नगरों आदि का कूड़ा, कचरा, नालियों के वाहित जल तथा दूषित जल उनमें मिला देना है। हो यह रहा है कि इसी प्रदूषित जल को बड़े बड़े नगरों में शोधन करके नगरीय जनता को पीने के लिए दिया जा रहा है लेकिन यह फिर भी दूषित है।"*

कुंजीभूत शब्द– भौतिक, रासायनिक, जैविक गुण, अवांछनीय परिवर्तन, सकल कारक, घटक, चतुर्दिक विकास, विकास।

प्रदूषण ने प्राकृतिक परिवेश, सन्तुलन एवं भूमि संसाधनों को भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया है जो नागरिक क्षेत्रों में घातक प्रभाव डाल रहे हैं। अत्यधिक कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से भूमि के सहज जीवाणु नष्ट होते जा रहे हैं, और विषाणु (Virus) बढ़ते जा रहे है; जिससे भूमि की सामान्य प्रवृत्ति, प्रकृति एवं उसकी उर्बरता भी कृत्रिम हो गयी है क्योंकि उस पर रासायनिक खादें, उर्बरक, पैस्टीसाइड्स, कीटनाशक दवाएँ अपना प्रभाव छोड़ रहे हैं। साथ ही वायु द्वारा अनेक प्रकार से धुँआ व रासायनिकों के माध्यम से प्रदूषण दूर दूर तक फैलता जा रहा है।

प्रदूषित जल में मिलने वाले कीटाणु एवं विषाणु जल जीवों में विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ, विकृतियाँ एवं कमियाँ पैदा कर रहे हैं। पृथ्वी पर पैदा होने वाले अनेक प्रकार के रासायनिक, घातक पदार्थ एवं भूमिगत जल तथा ऐसे अपशिष्ट पदार्थों के ढेर, सागर में डाल देने से अन्ततः समुद्र में घुलते रहते हैं। इनमें से क्लोराइड्स, नाइट्रेट्स, शीशा, ताँबा, निकिल के यौगिक, डिर्जेन्ट्स, वायोसिडिक, हाइड्रोकार्बन तथा बार्ड फिनाइल, गन्धित पदार्थ व उनके अवशिष्ट, रचना क्रियाशीलता, शरीर के संस्थानों (System) की कार्यप्रणाली एवं स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालकर भाँति–भाँति की बीमारियाँ पैदा कर रहे हैं। जिसका मुख्य कारण, सम्पूर्ण परिवेश का विभिन्न प्रकार से प्रदूषित होना है।

गम्भीर चिन्तन का विषय यह है कि; क्या सबसे अधिक चिन्तनशील व जिज्ञासु प्राणी "मानव" को पर्यावरण का सामान्य बोध (ज्ञान) है ? क्या उसे पर्यावरण का सम्यक ज्ञान है ?

क्या उसमें प्रदूषित के प्रति किंचित मात्र भी जागरूकता है ? क्या वह पर्यावरणीय दुष्प्रभावों के प्रति बेखबर नहीं है ? आज सब कुछ प्रदूषित है फिर भी हम बेखबर हैं; जबकि पर्यावरण बोध, सम्यक ज्ञान तथा जागरूकता मानव के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यहाँ पर यह भी स्पष्ट कर देना जरूरी है कि–

(1) पर्यावरण बोध के अभाव में; पर्यावरण का सम्यक ज्ञान होना नितान्त असम्भव है।

(2) जब तक बोध व सम्यक ज्ञान नहीं होगा, तब तक जागरूकता का प्रश्न ही नहीं उठता।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या– उपरोक्त प्रस्तुत समस्त सन्दर्भित साहित्य के प्रकाश में शोधार्थी ने प्राथमिक तथ्य संकलित करने का प्रयास किया है। सर्वप्रथम प्रश्न किया गया है किः "क्या आपको पर्यावरण प्रदूषण के बारे में कुछ जानकारी है ?" प्राप्त प्राथमिक तथ्यों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. 1 : "क्या आपको पर्यावरण प्रदूषण के बारे में कुछ जानकारी है ?" प्रश्न का सूचनादाताओं के अनुसार प्रत्युत्तर

क्रमांक	सूचनादाताओं के अनुसार प्रश्न का प्रत्युत्तर	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	"हाँ" (सकारात्मक)	296	98.67
2.	"नहीं" (नकारात्मक)	—	00.00
3.	अनुत्तरित रहे	04	01.33
	समस्त योग	300	100.00

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

प्रस्तुत तालिका के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रथम दृष्टया सर्वेक्षित 300 निदर्शितों में से 296 (98.67%) निदर्शितों ने सकारात्मक उत्तर प्रदान किया, मात्र 4 निदर्शित अनुत्तरित रहे हैं। उल्लेखनीय है कि कोई भी उत्तरदाता इस प्रसंग में नकारात्मक प्रत्युत्तर वाला नहीं पाया गया है। यह पूछे जाने पर कि "क्या जानकारी है ?" – बताइए तब कोई भी उत्तरदाता गहनता से सम्पूर्ण जानकारी न दे सका। केवल बताया गया है – (1) हवा खराब है (2) हम गन्दी जगहों में रहते हैं (3) दुर्गन्ध आती रहती है (4) हमें तो रहना ही है, आदि। इस जानकारी (तथ्यों) से स्पष्ट होता है कि निदर्शित सूचनादाताओं में पर्यावरण का बोध नहीं है। यही कारण है कि उनमें पर्यावरण प्रदूषण, प्रदूषकों, स्रोतों, घातक दुष्परिणामों के बारे में सम्यक ज्ञान नहीं है। स्पष्टतः निदर्शितों में पर्यावरण बोध तथा सम्यक ज्ञान का अभाव पाया गया है। अनुसंधित्सु ने निदर्शितों में अभिज्ञान–स्तरों तथा पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए विभिन्न चरों (धर्म, जाति, लिंग, शिक्षा, आयु) का सहारा लिया है; अध्ययन से प्राप्त तथ्य निम्नांकित हैं–

पर्यावरण बोध (अभिज्ञान) स्तर– यो तो जन सामान्य का प्रत्येक व्यक्ति नर हो अथवा नारी, बाल हो अथवा वृद्ध, मजदूर हो अथवा किसान, सभी न्यूनाधिक मात्रा में प्रदूषित पर्यावरण तथा उससे होने वाली हानियों व बीमारियों से ग्रस्त तो होते ही हैं। कोई अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने की दृष्टि से सचेष्ट रहता है तो अन्य अभिज्ञान के अभाव में अजागरूक। जो सचेष्ट रहते है; वे जागरूक कहे जाते हैं और जो इस ओर ध्यान ही नहीं देते हैं; वे उदासीन कहे जाते हैं। बीमारियाँ तथा रोग, मानव के लिए जीवन तथा स्वास्थ्य विरोधी लक्षण हैं। इसलिए रूग्णता से निजात पाने के लिए यह आवश्यक है कि वह बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं अर्जित करे; किन्तु इस अर्जन में पर्यावरण बोध/अभिज्ञान महत्वपूर्ण होता है अभिज्ञान स्तर के विकास में संचार माध्यमों की भूमिका अहम होती है क्योंकि संचार साधन ही ऐसे माध्यम हैं जिनसे व्यक्ति विशेष तथा समाज (जन समुदाय) किसी चीज के सम्बन्ध में अभिज्ञान एवं जागरूकता के स्तरों को प्राप्त करते हैं। शोधार्थी ने सर्वप्रथम अभिज्ञान– स्तरों को जानने का प्रयास किया है। निदर्शितों में अभिज्ञान (बोध) (उच्च, मध्यम तथा निम्न) कैसा है ? अध्ययन के लिए चुने गए कुल 300 निदर्शितों के पर्यावरण बोध के बारे में अभिज्ञान स्तरों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है; जिनका मूल्यांकन लिकर्ट मनोवृत्तिमापक द्वारा किया गया है–

तालिका नं. 2 : प्रदूषित पर्यावरण के दुष्प्रभावों की जानकारी (बोध) सम्बन्धी अभिज्ञान स्तर (लिकर्ट मनोवृत्तिमापक के अनुसार)

क्रमांक	अभिज्ञान स्तरों का विवरण	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	उच्च	10	03.33
2.	मध्यम	62	20.67
3.	निम्न	228	76.00
	समस्त योग	300	100.00

उपर्युक्त तालिका के आँकड़ों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि कुल 300 निदर्श सूचनादाताओं में से प्रदूषित पर्यावरण के दुष्प्रभावों के सम्बन्ध में 10 (3.33%) निदर्शितों में अभिज्ञान का स्तर निम्न, 62 (20.67%) निदर्शितों में अभिज्ञान का स्तर मध्यम तथा 228 (76.00%) में अभिज्ञान निम्न स्तरीय पाया गया है। ऐसा मूल्यांकन (स्पष्ट) होने के पश्चात् निम्न अभिज्ञान होने के लिए उत्तरदायी कारकों का भी अध्ययन किया गया, जिस पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. 3% प्रदूषित पर्यावरण के दुष्प्रभावों से होने वाली बीमारियों प्रति अभिज्ञान स्तर निम्न होने के लिए उत्तरदायी कारण

क्रमांक	निम्न अभिज्ञान हेतु उत्तरदायी कारण	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	अशिक्षा	180	60.00
2.	अज्ञानता	89	29.67
3.	रूढ़िवादिता	29	09.67
4.	निर्धनता	02	00.66
	समस्त योग	300	100.00

सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि मलिन बस्तियों के निदर्श सूचनादाताओं में प्रदूषित पर्यावरण से होने वाली बीमारियों व रोगों के प्रति अभिज्ञान (बोध) न होने अथवा कम होने के लिए उत्तरदायी कारणों

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

के सम्बन्ध में 300 सूचनादाताओं में से 180 (60.00%) निदर्शितों ने उत्तरदायी कारण अशिक्षा, 89 (29.67%) निदर्शितों ने अज्ञानता, 29 (9.67%) निदर्शितों ने रूढ़िवादिता तथा 2 (9.67%) निदर्शितों ने रूढ़िवादिता तथा 2 (00.66%) निदर्शितों ने निर्धनता कारण बताए हैं। स्पष्टतः अशिक्षा सर्वोपरि उत्तरदायी कारण है। शासन को चाहिए कि मलिन बस्तियों के निवासियों में शिक्षा स्तर को ऊँचा उठाने के प्रयास करे क्योंकि किसी भी चीज के बारे में अभिज्ञान (बोध) विकसित करने में शिक्षा, अहम भूमिका का निर्वाह करती है।

यह निर्विवाद सत्य है कि स्वास्थ्य का प्रत्यक्ष सम्बन्ध पर्यावरण से है। प्राणी/मानव इनके प्रति कितना जागरूक है; मलिन बस्तियाँ उसका नग्न चित्र हैं। जागरूकता एक ऐसी दशा है जिसके अभाव में स्वास्थ्य के सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति में किसी भी प्रकार की चेतना की कल्पना करना असंभव है तथा असाधारण (गंभीर) से असाधारण बीमारियों/रोगों के प्रति सजग व सचेत अवश्य रहेगा यदि उसमें चेतना हो। ऐसा होने से व्यक्ति, यहाँ तक कि संक्रामक रोगों के प्रति निवारण सम्बन्धी जानकारी से भी परिचित होगा अथवा परिचित होने के प्रति जागरूक होगा। निदर्शितों में जागरूकता की दशाओं पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. 4 : सूचनादाताओं में प्रदूषित पर्यावरण तथा रोगों व बीमारियों के प्रति जागरूकता सम्बन्धी विवरण

क्रमांक	सूचनादाताओं में जागरूकता की स्थिति	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	जागरूक	37	12.33
2.	अजागरूक	148	49.33
3.	उदासीन/तटस्थ	115	38.34
	समस्त योग	300	100.00

प्रस्तुत तालिका के तथ्यों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित 300 निदर्शितों में से प्रदूषित पर्यावरण तथा बीमारियों/रोगों के प्रति 37 (12.33%) सूचनादाता जागरूक, 148 (49.33%) अजागरूक तथा 115 (38.34%) उदासीन पाए गए हैं। जागरूकता की स्थिति का मूल्यांकन विभिन्न चरों : धर्म, लिंग, जाति, षिक्षा तथा आयु के आधार पर करने का प्रयास किया गया है। निम्न तालिका निदर्शितों की धार्मिक संरचना के सापेक्ष पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता की स्थिति पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. 5 : निदर्शितों की धार्मिक संरचना के सापेक्ष जागरूकता की स्थिति

क्रमांक	धार्मिक संरचना	पर्यावरण प्रदूषण तथा बीमारियों के प्रति जागरूकता की दशाएँ			
		जागरूक	अजागरूक	उदासीन	योग
1.	हिन्दु	25 (24.27)	53 (51.46)	35 (33.37)	103 (100.00)
2.	इस्लाम	12 (06.06)	87 (46.03)	80 (42.33)	189 (100.00)
3.	अन्य	--	08 (100.00)	--	08 (100.00)
	समस्त	37 (12.33)	148 (49.33)	115 (38.34)	300 (100.00)

प्रस्तुत तालिका के आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 103 हिन्दु निदर्शितों में से 25 (24.27%) जागरूक, 53 (51.36%) अजागरूक; 35 (33.97%) उदासीन पाए गए हैं जबकि 189 इस्लाम धर्म के निदर्शितों में से 12 (06.06%) जागरूक, 87 (46.03%) अजागरूक, 80 (42.33%) उदासीन पाए गए हैं तथा अन्य धर्मावलम्बी 8 निदर्शितों शत प्रतिशत अजागरूक पाए गए हैं। उल्लेखनीय है कि मुस्लिम निदर्शितों की तुलना में हिन्दू निदर्शित में जागरूकता अधिक पायी गयी है एवं उदासीन निदर्शितों का प्रतिशत मुसलमानों में जागरूकता अधिक पायी गयी है एवं उदासीन निदर्शितों की तुलना में हिन्दू निदर्शितों में जागरूकता अधिक पायी गयी है एवं उदासीन निदर्शितों का प्रतिशत मुसलमानों में हिन्दूओं से अधिक पाया गया है। निम्न तालिका निदर्शितों के लिंग सापेक्ष पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता की स्थिति पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. 6 : निदर्शितों के लिंग सापेक्ष जागरूकता की स्थिति/दशाएँ

क्रमांक	निदर्शितों के लिंग	पर्यावरण प्रदूषण तथा बीमारियों के प्रति जागरूकता की दशाएं			
		जागरूक	अजागरूक	उदासीन	योग
1.	पुरूष	37 (16.89%)	98 (44.75%)	84 (38.36%)	219 (100.00%)
2.	महिलाएँ	– (00.00%)	50 (61.73%)	31 (38.27%)	81 (100.00%)
	समस्त योग	37 (12.33%)	148 (49.33%)	115 (38.34%)	300 (100.00%)

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

(नोट : कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्षित आँकड़ें प्रतिशतता प्रदर्शित करते हैं)

इस तालिका के तथ्यों के विश्लेषण तथा समीक्षा से स्पष्ट होता है कि 219 निदर्श पुरूषों में से 37 (16.89%) जागरूक, 98 (44.75%) अजागरूक, 84 (38.36%) उदासीन एवं 81 महिला निदर्शितों में से 50 (61.73%) अजागरूक तथा 31 (38.27%) उदासीन पायी गयी हैं। इन तथ्यों के प्रकाश में कहा जा सकता है कि महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों में जागरूकता अधिक पायी गयी है। जबकि उदासीनता का प्रतिशत पुरूष तथा महिलाओं में लगभग समान पाया गया है। निम्न तालिका निदर्शितों की जाति सापेक्ष पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता की स्थिति पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है—

तालिका नं7 : निदर्शितों की जाति सापेक्ष जागरूकता की स्थिति/दशाएँ

क्रमांक	निदर्शितों की जाति	पर्यावरण प्रदूषण तथा बीमारियों के प्रति जागरूकता की दशाएँ			
		जागरूक	अजागरूक	उदासीन	योग
1.	सवर्ण जाति	35 (85.37)	– (00.00)	06 (14.63)	41 (100.00)
2.	पिछड़ी जाति	02 (03.77)	15 (28.30)	36 (67.93)	53 (100.00)
3.	अनुसूचित जाति	––(00.00)	133 (64.56)	73 (35.44)	08 (100.00)
	समस्त योग	37 (12.33)	148 (49.33)	115 (38.34)	300 (100.00)

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन किए गए कुल 300 निदर्शितों में से सवर्ण जातियों के 41 निदर्शितों में से 35 (83.37%) जागरूक, 06 (14.63%) उदासीन, पिछड़ी जातियों के 53 निदर्शितों में से 02 (3.77%) जागरूक, 15 (28. 30%) अजागरूक तथा 36 (67.96%) उदासीन पाए गए हैं; अनुसूचित जातियों के 206 निदर्शितों में से 133 (64.56%) अजागरूक तथा 73 (35.44%) उदासीन पाए गए हैं। इन तथ्यों के प्रकाश में निम्न निष्कर्ष स्थापित किए जा सकते हैं—

(1) अनुसूचित तथा पिछड़ी जातियों में जागरूकता, सवर्ण जातियों के लोगों से अधिक पायी गयी हैं।
(2) पिछड़ी जातियों के लोगों की तुलना में, अनुसूचित जातियों के लोगों में अजागरूकता अधिक पायी गयी है।
(3) अनुसूचित तथा पिछड़ी जातियों के लोगों में उदासीनता भी पायी गयी है।

निम्न तालिका निदर्शितों के शैक्षिक स्तरों के सापेक्ष पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली बीमारियों/रोगों के प्रति जागरूकता की स्थिति व दशाओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है—

तालिका नं. 8 : शैक्षिक स्तरों के सापेक्ष निदर्श सूचनादाताओं में जागरूकता की स्थिति दशाएँ

क्रमांक	निदर्शितों के शैक्षिक स्तर	पर्यावरण प्रदूषण तथा बीमारियों के प्रति जागरूकता की दशाएँ/स्थिति			
		जागरूक	अजागरूक	उदासीन	योग
1.	अशिक्षित/निरक्षर	– (00.00)	67 (100.00)	– (00.00)	67 (100.00)
2.	साक्षर	07 (11.67)	– (00.00)	53 (88.33)	60 (100.00)
3.	शिक्षित	30 (17.34)	81 (46.82)	62 (35.84)	173 (100.00)
	समस्त योग	37 (12.33)	148 (49.33)	115 (38.34)	300 (100.00)

(नोट : कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आँकड़े प्रतिशतता प्रदर्शित करते हैं)

प्रस्तुत तालिका के आँकड़ों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित कुल 300 सूचनादाताओं में से, शैक्षिक स्तरों की दृष्टि से : अशिक्षित 67 निदर्शितों में से 67 (100.00%) अर्थात शत प्रतिशत निदर्शित अजागरूक पाए गए हैं; 60 साक्षर निदर्शितों में से 7 (11.67%) जागरूक, 53 (88.33%) उदासीन पाए गए हैं, जबकि 173 शिक्षित निदर्शितों में से % 36 (17.34%) जागरूक, 81 (46.82%) अजागरूक तथा 62 (35.84%) निदर्शित उदासीन पाए गए हैं।

इन समस्त तथ्यों के प्रकाश में यह कहा जा सकता है—

(1) शत प्रतिशत अशिक्षित/निरक्षर सूचनादाता पर्यावरण प्रदूषण तथा बीमारियों के प्रति अजागरूक पाए गए हैं।
(2) शिक्षित तथा साक्षरों में जागरूकता पायी गयी है। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि साक्षर सूचनादाताओं की अपेक्षा शिक्षित सूचनादाताओं में जागरूकता का प्रतिशत अधिक पाया गया है।
(3) उदासीनता का प्रतिशत साक्षर सूचनादाताओं में 83.33% (सर्वाधिक) पाया गया है। इनमें पर्यावरण प्रदूषण तथा

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

बीमारियों के प्रति उदासीनता बरतने का एक मात्र कारण अशिक्षित होना है।

निम्न तालिका निदर्शितों की आयुगत आधार पर पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली हॉनियों (रोगों व बीमारियों) के प्रति निदर्शितों में जागरूकता की स्थिति/दशाओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

क्रमांक	आयु (वर्षों में) के विभिन्न स्तर	पर्यावरण प्रदूषण तथा बीमारियों के प्रति जागरूकता की दशाएँ			
		जागरूक	अजागरूक	उदासीन	योग
1.	0 – 25	05 (100.00)	– (00.00)	– (00.00)	05 (100.00)
2.	25 – 50	32 (11.39)	143 (50.89)	106 (37.72)	281 (100.00)
3.	50 वर्ष से अधिक	– (00.00)	05 (35.71)	09 (64.29)	14 (100.00)
	समस्त योग	37 (12.33)	148 (49.33)	115 (38.34)	300 (100.00)

(नोट : कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित प्रतिशतता प्रदर्शित करते हैं)

प्रस्तुत तालिका के आँकड़ों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित 300 निदर्श सूचनादाताओं में पर्यावरण प्रदूषण तथा तत्जनित रोगों व बीमारियों के सम्बन्ध में जागरूकता की स्थिति के सम्बन्ध में आयु संरचना की दृष्टि से % 25 वर्ष से कम आयु के 5 निदर्शितों में से % शत प्रतिशत सूचनादाताओं में जागरूकता पायी गयी है, 281 निदर्शितों जिनकी आयु 25 से 50 वर्ष के मध्य है, में से 32 (11.39%) जागरूक, 143 (50.89%) अजागरूक तथा 106 (37.72%) उदासीन पाए गए हैं जबकि 50 वर्ष से अधिक आयु के 14 निदर्ष सूचनादाताओं में से– 05 (35.37%) अजागरूक तथा 09 (64.29%) उदासीन पाए गए हैं। इन समस्त तथ्यों के प्रकाश में निम्न निष्कर्ष उद्घाटित किए जा सकते हैं–

(1) कम आयु वर्ग (विशेषकर नव युवक–युवतियों) में शत प्रतिशत में प्रदूषित पर्यावरण तथा तत्जनित रोगों व बीमारियों के प्रति जागरूकता देखने को मिली है।

(2) 50 वर्ष से तथा इससे अधिक आयु वर्ग के लोगों में (64.29%) सर्वाधिक में प्रदूषित पर्यावरण के प्रति उदासीनता पायी गयी है जिसके कारण अधिकांशतः व्यक्ति (पुरूष तथा महिलाएँ) विभिन्न रोगों तथा बीमारियों के ग्रसित पाए गए हैं।

(3) आयु वर्ग 25 से 50 वर्ष, अन्तराल के व्यक्तियों में जागरूकता, अजागरूकता तथा उदासीनता तीनों ही स्थितियाँ/दशाएँ देखने को मिली है।

पर्यावरणीय दुष्प्रभावों के प्रति सूचनादाताओं के अभिमत/दृष्टिकोण– अनुसंधित्सु ने अपने समस्त सूचनादाताओं से यह जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है कि मलिन बस्तियों के निवासियों के स्वास्थ्यों पर प्रदूषित पर्यावरण से सामान्य प्रभाव पड़ रहा है, या अधिक प्रभाव पड़ रहा है, अथवा अत्यधिक प्रभाव पड़ रहा हैः के सन्दर्भ में निदर्शितों के अभिमत/दृष्टिकोण क्या हैं ? सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक आँकड़ों पर अग्रांकित तालिकाएं संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं 9 % प्रदूषित पर्यावरण से मलिन बस्तियों के निवासियों के स्वास्थ्यों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति निदर्शितों के अभिमत/दृष्टिकोण

क्रमांक	निदर्श सूचनादाताओं के अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1.	सामान्य प्रभाव पड़ रहा है	45	15.00
2.	सामान्य से अधिक प्रभाव पड़ रहा है	65	21.67
3.	अत्यधिक प्रभाव पड़ रहा है	190	63.33
	समस्त योग	300	100.00

इस तालिका के तथ्यों के विवेचन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित कुल 300 सूचनादाताओं में 45 (15.00%) निदर्शित सामान्य प्रभाव अनुभव करते हैं, 65 (21.67%) निदर्शित सामान्य से अधिक प्रभाव पड़ना अनुभव कर रहे हैं; जबकि 190 (63. 33%) निदर्शित प्रदूषित पर्यावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ना अनुभव कर रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभावों का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन करने की दृष्टि से शोधार्थी ने विभिन्न चरों (लिंग, धर्म, जाति, शिक्षा तथा आयु के आधार पर सापेक्ष) अध्ययन करने का प्रयास किया है; सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक तथ्य अग्रांकित हैं–

तालिका नं. 10 : निदर्शितों के लिंग सापेक्ष प्रदूषित पर्यावरण से मलिन बस्तियों के निवासियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव के प्रति दृष्टिकोण

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

क्रमांक	निदर्शितों की लिंग	स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति अभिमत (आवृत्तियाँ तथा प्रतिशत)			
		सामान्य	सामान्य से अधिक	अत्यधिक	योग (प्रतिशत)
1.	पुरूष	09 (04.11)	20 (09.13)	190 (86.76)	219 (100.00)
2.	महिलाएँ	36 (44.44)	45 (55.56)	– (00.00)	81 (100.00)
	समस्त योग	45 (15.00)	65 (21.67)	190 (63.33)	300 (100.00)

प्रस्तुत तालिका के आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 219 निदर्श पुरूष सूचनादाताओं में से 9 (4.11%) निदर्शितों ने सामान्य प्रभाव पड़ना, 20 (9.13%) ने सामान्य से अधिक प्रभाव पड़ना और 190 (86.76%) ने अत्यधिक प्रभाव पड़ना बताया है जबकि 81 निदर्श महिला सूचनादाताओं में से 36 (44.44%) निदर्शितों ने सामान्य प्रभाव पड़ना तथा 45 (55. 56%) ने सामान्य से अधिक प्रभाव पड़ना स्वीकार किया है। इन तथ्यों के आलोक में यह स्पष्ट है कि–

(1) सर्वाधिक (86.76%) सूचनादाताओं का मानना है कि पर्यावरण प्रदूषण का मलिन बस्तियों के निवासियों के स्वास्थ्य पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

(2) महिलाओं की तुलना में पुरुष सूचनादाताओं ने जनस्वास्थ्य पर सामान्य से लेकर अत्यधिक सभी प्रकार के दुष्प्रभाव पड़ना स्वीकार किए हैं।

(3) सूचनादाताओं ने बताया कि जो व्यक्ति जैसे वातावरण में कार्य करता है; तथा निवास कर रहा है; उसी रूप में उनके परिवारों के निवासियों के स्वास्थ्य प्रभावित हो रहे हैं। पुरूष वर्ग फैक्ट्रियों में आग की भट्टियों के सामने कोयले धुँए तथा अत्यधिक प्रदूषित वातावरण में काम करते हैं, इसलिए उन पर प्रदूषित वातावरण के अत्यधिक प्रभाव पड़ रहे हैं।

निम्न तालिका निदर्शितों में शिक्षा के सापेक्ष प्रदूषित पर्यावरण से मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के प्रति निदर्शितों के अभिमतों पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. 11 : निदर्शितों में शिक्षा सापेक्ष प्रदूषित पर्यावरण से मलिन बस्तियों के निवासियों के स्वास्थ्यों पर पड़ने वाले विभिन्न दुष्प्रभावों के सम्बन्ध में अभिमत/दृष्टिकोण

क्रमांक	शैक्षिक स्तर	स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति अभिमत (आवृत्तियाँ/प्रतिशत			
		सामान्य	सामान्य से अधिक	अत्यधिक	योग
1.	अशिक्षित/निरक्षर	– (00.00)	17 (00.00)	50 (74.63)	67 (100.00)
2.	साक्षर	45 (75.00)	15 (25.00)	– (00.00)	60 (100.00)
3.	शिक्षित	– (00.00)	33 (19.08)	140 (80.92)	172 (100.00)
	समस्त योग	45 (15.00)	65 (21.67)	190 (63.33)	300 (100.00)

(नोट : कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आँकड़े प्रतिशतता प्रदर्शित करते हैं)

प्रस्तुत तालिका के आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पर्यावरण प्रदूषण से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव के सन्दर्भ में अशिक्षित 67 सूचनादाताओं में से 17 (25.37%) ने सामान्य से अधिक, 50 (74.63%) ने अत्यधिक; और साक्षर 60 सूचनादाताओं में से 45 (75.00%) ने सामान्य प्रभाव, 15 (25.00%) ने सामान्य से अधिक प्रभाव पड़ना स्वीकार किया है जबकि 173 शिक्षित सूचनादाताओं में से 33 (19.08%) ने सामान्य से अधिक प्रभाव तक तथा 140 (80.92%) सूचनादाताओं ने स्वास्थ्यों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ना बताया है। निम्न तालिका निदर्शितों की आयु की सापेक्ष पर्यावरण प्रदूषण से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के प्रति निदर्शितों के अभिमतों पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. 12 : निदर्शितों की आयु के सापेक्ष प्रदूषित पर्यावरण से मलिन बस्तियों के निवासियों के स्वास्थ्यों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के सम्बन्ध में निदर्श सूचनादाताओं के अभिमत/दृष्टिकोण

क्रमांक	निदर्शितों की आयु (वर्षों में)	स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति अभिगत (आवृत्तियाँ/प्रतिशत)			
		सामान्य	सामान्य से अधिक	अत्यधिक	योग
1.	25 वर्षों से कम	– (00.00)	– (00.00)	05 (100.00)	05 (100.00)
2.	25–50 वर्ष	45 (16.01)	51 (18.15)	185 (65.84)	189 (100.00)
3.	50 वर्षों से अधिक	– (00.00)	– (00.00)	08 (100.00)	08 (100.00)
	समस्त योग	45 (15.00)	65 (21.67)	190 (63.33)	300 (100.00)

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

(नोट : कोष्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित आँकड़ें प्रतिशतता प्रदर्शित करते हैं)

प्रस्तुत तालिका के आँकड़ों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि प्रदूषित पर्यावरण से स्वास्थ्यों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति 25 वर्ष से कम आयु के शत प्रतिशत सूचनादाताओं ने अत्यधिक प्रभाव पड़ना स्वीकार किया है, ठीक यही स्थिति 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के 14 सूचनादाताओं की रही है इन्होंने भी (शत प्रतिशत ने) सामान्य से अधिक प्रभाव पड़ना स्वीकार किया है; जबकि 25 से 50 वर्ष आयु वर्ग के 281 सूचनादाताओं में से 45 (16.1%) ने सामान्य प्रभाव, 51 (15. 15%) ने सामान्य से अधिक प्रभाव और 185 (65.84%) निदर्षित (सर्वाधिक) ने स्वास्थ्यों पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वीकार किया है। इन तथ्यों के प्रकाश में यह कहा जा सकता है कि–

(1) युवा वर्ग के सूचनादाताओं के अनुसार प्रदूषित पर्यावरण का मानव स्वास्थ्यों पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, ऐसा स्वीकार किया है जबकि 50 वर्ष से अधिक उम्र के सूचनादातओं ने स्वास्थ्यों पर सामान्य से अधिक प्रतिकूल पड़ना स्वीकार किया है।

(2) 25 से 50 वर्ष आयु वर्ग के 66% सूचनादातओं ने भी स्वास्थ्यों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ना बताया है कि तथा यह भी स्वीकार किया है कि मलिन बस्तियों में प्रदूषण से गम्भीर बीमारियाँ हो रही हैं, फिर भी निवासी अजागरूक बने हुए हैं। अतः सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रदूषित पर्यावरण से मलिन बस्तियों के निवासियों के स्वास्थ्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहे हैं जिसमें उनमें विभिन्न प्रकार के रोग तथा बीमारियाँ जनित हो रही हैं। इस समस्या के समाधान हेतु प्रभावी तथा त्वरित प्रयासों की परमावश्यकता है, तॉकि जनमानस को प्रदूषित पर्यावरण के दुष्प्रभावों से बचाया जा सके, अन्यथा प्रदूषित पर्यावरण के परिणाम दूरगामी एवं अत्यन्त घातक व गम्भीर होंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. The Oxford English Dictonary, The University Press, Great Britain Vol.I, 2016, page-592.
2. Encyclopaedia Britannica; Volume II, William Benton Press, 2017, page-74.
3. Saxena, P.B; Basic Elements of Environmental Geography (In the Context of Indian Ecology), Kalyani Publishers & Distributers Muamdar Street, Calcutta-9, 2018, p-308
4. Bose, S.C; Environmental Centrol-Pre & Post Independence in India, Published research paper by Director N.B.T. (INDIA), New Delhi, 2019, page-25.
5. Agrawal, Asat & ; Environment Survey; The Government of India, New Sharma M.K. (et.al.) Delhi, (Govt. Publication) 2020-98,p-417.
6. Mathur, K.C; "राष्ट्रीय सम्मेलन : पर्यावरण बोध, संरक्षण और जन चेतना : (सामाजिक वानिकी विभाग, 20 जनवरी 2020) सौजन्य सहयोग : उ0प्र0 शासन, लखनऊ, (वितरित परिपत्र), पृ0 1.

*****